रिकॉर्ड :– ओम नमो शिवाय..... 7/10/1965

ॐ शान्ति। तुम बच्चों को अभी अच्छी तरह निश्चय हो गया है कि बाप आकर नई सृष्टि रचते हैं। ऐसे नहीं कि सृष्टि है नहीं और बाप आकर रचते हैं। बाप को बुलाते हैं कि हम जो पतित हैं उनको पावन बनाओ। तो दुनिया तो है ही, बाकी पुरानी को नई करते हैं। यह ज्ञान मनुष्यों के लिए है, जानवरों के लिए नहीं है; क्योंकि मनुष्य पढ़कर मर्तबा पाते हैं न। अभी जो दुख देने की सामग्री है इसमें सब आ गए, देह, देह के धर्म आदि। तो बाप इन दुख की सामग्री को सुख का बनाते हैं। तभी बाप ने कहा है मैं दुखधाम को सुखधाम बनाता हूँ। मैं हूँ ही दुख हर्ता, सुख कर्ता। अब तुम्हारे अन्दर शहनाई बजनी चाहिए कि हमारे सुख के दिन सामने आ रहे हैं। जानते हो कि बाप कल्प (बाद मिलते) हैं। और कोई ऐसे किसी के लिए नहीं कहता। भगवान आते ही हैं भक्तों की सद्गति करने। भक्ति में अपने साथ हाथ में हाथ लेकर ले चलता हूँ। ऐसे नहीं कि सुखधाम में जाकर तुमको छोड़ता हूँ। नहीं। इस समय के पुरुषार्थ अनुसार आप ही जाकर प्रालब्ध भोगते हो। समझाने से यह पक्का हो जाता है। जितना जो समझाते हैं उतना उनको ड्रामा पक्का होता जाता है। मनुष्य कोई ड्रामा देखकर आते हैं तो कुछ दिन तक पक्का हो जाता है। तो तुमको भी यह पक्का होता जाता है; क्योंकि यह बेहद का ड्रामा है। सतयुग से लेकर इस समय तक ड्रामा तुम्हारी बुद्धि में है। सेन्टर पर आते हो तो सावधानी मिलती है। तो वह याद आय जाता है। यहाँ भी बैठे हो तो याद है सृष्टि ड्रामा तो बड़े ते बड़ा बेहद का है; परन्तु है सेकण्ड का काम। सेकण्ड में कहा जाता है ड्रामा को समझा है? तो झट बुद्धि में आ जाता है। जानते हो कि कौन–2 आकर धर्म स्थापन करते हैं। मूलवतन को याद करना तो सेकण्ड का काम है, फिर दूसरा नम्बर है सूक्ष्मवतन। तो वहाँ भी कोई बड़ी बात नहीं है; क्योंकि वहाँ भी सिर्फ ब्र०वि०शं० दिखाया है तो वह भी बुद्धि में आ जाता है फिर है स्थूल वतन। इसमें 4 युगों का चक्र बुद्धि में आ जाता है। यह है बाप की रचना। ऐसे नहीं कि सिर्फ तुम स्वर्ग को याद करते हो? नहीं। स्वर्ग से लेकर कलियुग तक चक्र बुद्धि में है तो औरों की भी बुद्धि में बिठाना है। चित्र तो सबके पास हैं ही। 30×40 वाले चित्र सबके घर रहने चाहिए जो कोई आवे तो उनको बैठ समझाना चाहिए। दोस्त आदि हर एक के घर में आते तो हैं न। कोई भी आवे तो उनकी सर्विस तो करनी है। रहमदिल बनना है। महादानी बनना है। इसको अविनाशी ज्ञान रत्न कहा जाता है। इससे तुम भविष्य में धनवान बनते हो। शास्त्रों से जो सुनते हो उसको रत्न नहीं कहा जाता जो कि तुम उनसे धनवान बनो। उनको तो पत्थर कहा जाता है; क्योंकि सुनते–2 और ही पत्थर बुद्धि बन जाते हो। अगर किसी नए को ऐसा कहें तो अन्दर आग लग जाय, बैठ न सके, उठकर चला जाय। सुना हुआ तो है न कि यह कहते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है तो बिगड़ते हैं इसलिए ऐसे को क्लास में आने अलाउ नहीं किया जाता। और जगह पर तो ऐसे मनाह नहीं करते; क्योंकि वहाँ तो शास्त्र ही सुनाते हैं। तो बाप खुद कहते हैं कि जो पढ़ा और सुना हुआ है वह भूल जाओ। मनुष्य मरते समय सब कुछ भूल जाते हैं न तो यहाँ .... भी तुम जीते जी मरते हो न। तो बाप कहते हैं मैं नई दुनिया के लिए जो बातें बताता हूँ वह याद करो। यह जो शास्त्र है ये तो हैं मृत्युलोक के और भक्तिमार्ग की सामग्री। हम अब अमरलोक में जाते हैं तो अमरनाथ द्वारा अमर कथा सुन रहे हैं। कोई कहे कि मृत्युलोक कब शुरू होता है? जबसे रावण राज्य शुरू होता है। अमरलोक कब से शुरू होता है? जबसे राम का राज्य शुरू होता है। भक्ति की सामग्री तो इतनी फैली हुई है जैसे झाड़ फैला होता है। अभी नए झाड़ का कलम लग रहा है तो इस झाड़ को देखो, माया के तूफान कितने लगते हैं। जब तूफान लगता है तो बगीचे में जाकर देखो तो कितने फूल गिरे हुए होते हैं, थोड़े ही बच जाते हैं। यहाँ भी ऐसे ही हैं कि माया का तूफान आवे और बाप की याद में न रहने से कई मुरझा जाते हैं। कोई तो यह भी पढ़ते हैं। हातमताई का खेल है ना कि मुख में मुहलरा डालते थे। अगर बुद्धि में बाप की याद है तो माया का असर नहीं होता। बाबा

यह थोड़े ही कहते कि धंधा आदि न करो। धंधा भल करो, बाकी बाप को याद तो करो ना। मेहनत तो इसमें ज़रूर है। राजाई लेना कोई कम बात है क्या? कोई हद की राजाई लेते हैं तो भी कितनी मेहनत करनी पड़ती है। यह तो सतयुग की राजाई लेते हो, मेहनत करनी पड़े ना। परमात्मा को ज्ञान सागर कहा जाता है। जानी–जाननहार माना थॉट रीडर यानी अन्दर की जानने वाला। अन्दर की बात जानना यह भी एक रिद्धि–सिद्धि है। उससे प्राप्ति तो कुछ नहीं। अगर कोई उल्टा भी लटक जाए तो भी प्राप्ति कुछ नहीं हो सकती। आजकल तो आग से भी पार करते हैं। एक सन्यासी था। वह आग में भी चला जाता था। यह भी एक ..... आग का असर नहीं होता। सुना है ना सीता ने आग से पार किया तो यह भी आग को पार करते हैं। यह सब हैं शास्त्रों की दंत कथाएँ। इसमें है तो कुछ भी नहीं। वह तो कह देते शास्त्र अनादि हैं। कब से? तिथि तो कुछ है नहीं। यह भी अच्छा है जो दूसरे धर्मों की तारीख है तो उससे हिसाब लगाया जा सकता है। जैसे कहते हैं क्राइस्ट के 3000 वर्ष पहले भारत हेविन था; परन्तु पूरी तरह से यह भी जानते नहीं हैं। सिर्फ दुकान लगा देते हैं। भला हेविन में क्या था, यह भी नहीं जानते हैं। झाड़ का राज़ तुम्हारी बुद्धि में है तो तुम वर्णन कर सकती हो कि इस वृक्ष का फाउंडेशन कैसे लगा, फिर कैसे वृद्धि को पाता है अर्थात् डाल–टाल निकलते हैं। फ्लावरबाज बनाते हैं ना तो उसमें दिखाते हैं कि उसमें तीन फाउंडेन भी निकलते हैं। सोने–चाँदी का फ्लावरबाज बनाते हैं, ऊपर में भी फूल बनाते हैं। तो यह भी ऐसे ही है। पहले पहल देवता धर्म तना था, पीछे यह तीन धर्म फाउंटेन तने से निकलते हैं और ऊपर जो फूल दिखाते हैं अर्थात् उनकी प्रजा का फ्लावर दिखाते हैं। इसका मतलब है पहले बगीचा था। हर एक धर्म जब आता है तो विचार करो पहले तो फूलों का बगीचा होगा ना। गिरती कला में तो पीछे आएँगे अर्थात् पहले गोल्डन एज, फिर सिलवर, कॉपर। (आगे) अब आयरन में है। तो पढ़ाई बुद्धि में होनी चाहिए ना। नॉलेजफुल बाप बैठकर तुम बच्चों को कल्पवृक्ष ड्रामा का फुल नॉलेज देते हैं तो परमात्मा को ही ज्ञान सागर, बीजरूप कहा जाता है। यह एक ही मनुष्य शरीर का बीज है जो ऊपर में रहता है इनकारपोरियल वर्ल्ड में। तो इनकारपोरियल वर्ल्ड आत्माओं का हुआ ना। उसको कहते हैं ब्रह्माण्ड अर्थात् ब्रह्मलोक में आत्मा अण्डे मिसल रहती हैं। सा० भी करते हैं कि आत्मा बिन्दी रूप है, जैसे फायर फलाई (जुगनू) की तरह है। आगे फायर फलाई को इकट्ठा करते थे। जो जब इकट्ठा उड़ते थे तो झिलमिल–2 होती थी और उनकी लाइट भी कम होती है। तो आत्माएँ भी ऐसे मच्छरों की मुआफिक इकट्ठी उड़ेगी। तो आत्मा भी मच्छरों सदृश्य छोटी है ना। तो इस छोटी सी आत्मा में ही 84 जन्मों का पार्ट है। यह ड्रामा में हम आत्माओं का ही पार्ट है। तो तुमको सारे ड्रामा का सा० कराते हैं जिस ड्रामा अन्दर आत्मा एक्टर है। और एक्टरों को इस ड्रामा का पता नहीं है। तुमको याद ही करना है या समझाने वालों को या नॉलेज को, बस। सेकण्ड का ही ज्ञान है और इसका विस्तार भी है। है तो सिम्पल बात; परन्तु शुरू ज्ञान कब से हुआ? क्योंकि विस्तार करना पड़ता है; क्योंकि भूल जाता है। यहाँ माया के विघ्न पड़ते हैं। शारीरिक बीमारी भी आ जाती है। आगे कभी बुखार तक ना हुआ होगा तो ज्ञान में आने बाद बुखार भी हो जाता है। संशय पड़ जाता है कि ज्ञान में तो कर्मबंधन खलास होने चाहिए; परन्तु बीमारी क्यों आती है? तो बाबा कह देते हैं, यह बीमारी तो आएगी, हिसाब–किताब तो खत्म करना है।

नौ रत्न की अंगूठी बनाते हैं तो बीच में अच्छा वैल्युएबल रत्न लगाते हैं। आजू–बाजू कम कीमत वाला लगाते हैं; क्योंकि कोई रतन कोई हज़ार, कोई एक रु. का भी होता है। अब बाप कहते हैं यह हीरे जैसा अमूल्य जीवन है। तो हीरे जैसा जन्म सूर्यवंशी में लेना चाहिए। सतयुग की सतयुग का महाराजा और त्रेतायुग की अन्त के राजा में कितना फर्क होगा। तो यह ड्रामा की कहानी औरों को भी समझानी चाहिए। आओ तो हम आपको बतावें कि 5000 वर्ष पहले एक बहुत अच्छी देवी–देवताओं का राज्य था। आओ तो बतावें उन्होंने यह पद कैसे पाया। ल०ना० जो सतयुग की राजाई लेते हैं, उन्हों के 84 जन्म की हिस्ट्री–जाग्राफी सुनावें। ऐसे–2 टेम्पटेशन दे उनको अन्दर ले आना चाहिए। सेकण्ड की कहानी है; परन्तु है

पद्मों की। कहाँ भी तुम लोग जा सकते हो। कॉलेज में, यूनिवर्सिटी में, हॉस्पिटल में जाओ। तो कहना चाहिए कितना तुम बीमार पड़ते हो। हम आपको ऐसी दवाई दें कि तुम 21 जन्म बीमार नहीं पड़ेंगे। आपने सुना है कि परमात्मा ने कहा है मनमनाभव। तो बाप को याद करेंगे, विकर्म होंगे ही नहीं तो एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बन जावेंगे। आओ तो प०पि०प० की बायोग्राफी बताऊँ। परमात्मा सर्वव्यापी कहना कोई बायोग्राफी थोड़ी है? ऐसे–2 समझाना चाहिए। अच्छा, आज भोग है। रिकॉर्ड :– धरती को आकाश पुकारे...

इसको कहा जाता पुरानी झूठी दुनिया। इसको रौरव नर्क भी कहा जाता है। गरुड़ पुराण में भी बहुत रोचक बातें लिख दी हैं, डराने लिए। यह भी तो कोई ने बैठ बनाया होगा। देखो ..... बुद्धि? जैसे नॉवेल बनाने वाले नॉवेल ही बनाते रहते। उनका धंधा ही यह हो जाता है। गीत भी अच्छा है कि आना ही होगा प्रेम की दुनिया में। सूक्ष्मवतन में भी प्रेम है ना। देखो ध्यान में खुशी–2 में जाते हैं ना। सतयुग में भी सुख है, यहाँ तो कुछ नहीं है तो इस दुनिया से वैराग आना चाहिए। सन्यासियों का तो है (हद) का वैराग, तुम्हारा है बेहद का वैराग। तुम्हें सारी दुनिया को भूलना है। बाबा ने कल बम्बई में एक पत्र लिखा था। बाबा सिर्फ बम्बई वालों को नहीं कहते; परन्तु सभी सेन्टरों के लिए बाप की राय निकलती है। तुमको भाषण करना होता है सुबह और शाम को। 1½ घंटा सुबह, 1½ घंटा शाम। तो हर एक शहर में बड़े–2 आदमियों के पास हाल तो होते ही हैं और बहुतों के मित्र–संबंधी भी होते हैं। तो एडवरटाइज़ करनी है कि हमको परम पि०प० का परिचय देना है ताकि सभी परमात्मा से अपने वर्थ राइट ले सकें। हमको सिर्फ 1½ घंटा सुबह, 1½ घंटा शाम चाहिए। कोई हंगामा नहीं होगा। बाजा–गाजा नहीं। तो हमको बाजवी किराया पर कोई देवे तो हम ले सकते हैं। सारी पोजीशन को भी देखना है। घर को भी देखना है कि अच्छा है। अच्छा आदमी होगा तो अच्छे जिज्ञासुओं को लेकर आएगा। ऐसे–2 चार/पाँच जगह लेकर भाषण करना चाहिए। है स... पोजीशन के ऊपर। अगर अच्छी पोजीशन है तो चार सौ भी माह का दे सकते हो, नहीं तो 100 तक। पोजीशन को देखना चाहिए। बड़े–2 शहरों में अगर फर्स्ट फलोर ना मिले तो सेकेण्ड फलोर, नहीं तो लाचारी हालत में थर्ड फलोर भी ले सकते हैं। वैसे ही गाँवों में जैसा–2 गाँव, भले कोई का छोटा मकान हो, सारा मकान तो चाहिए नहीं, सिर्फ 3 पैर पृथ्वी चाहिए। सबको अपने संबंधियों से बात करते रहना चाहिए, कोई न कोई दे देंगे। तो ऐसे–2 सेन्टर चार/पाँच खोलते जाना चाहिए। कोई तो किराया भी नहीं लेंगे और कोई लेते–2 अगर तीर लग गया तो वह भी बन्द कर देंगे। सुबह–शाम जाए, क्लास कराय घर वापिस आ जाना चाहिए। जो विशाल बुद्धि होंगे वह अच्छा समझ और धारण करेंगे। जिनकी विशाल बुद्धि है उनको महारथी कहा जाता है। वे तो एक/दो के पिछाड़ी ऐसे–2 सेन्टर खोलते जाएँगे। अच्छा, मात–पिता, बाप–दादा का मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति गुरुवार के दिन यादप्यार, गुडमॉर्निंग।